ARYA SAMAJ (VEDIC MISSION) WEST MIDLANDS
321 Rookery Road, Handsworth
Birmingham B21 9PR
Tel : 0121 359 7727
enquiries@arya-samaj.org
www.arya-samaj.org
Charity Registration Number : 1156785

What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 44 | 05/2022-23 | MONTHLY | May 2022

Events	Date	Time
Volunteers Meeting (see page 28 for more information)	**Sunday 8th May 2022**	**1pm – 3pm**
New Yog Class (see 26 & 27 page for more information)	**Every Sunday**	**9:00am -11:00am**
New Bhangra Class (see 26 & 27 page for more information)	**Every Tuesday**	**6.30pm –7.30pm**
Volunteers Meeting (see 28 page for more information)	**Sunday 12th June 2022**	**1pm – 3pm**

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.
Tel - 0121 359 7727
Email - enquiries@arya-samaj.org Website - www.arya-samaj.org
Charity registration number 1156785

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Is God totally undefeatable? Can we also become undefeatable? - Vimal Wadhawan Yogachary	4
महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में कुछ महत्त्वपूर्ण राजागण-- आचार्य डॉ. उमेश यादव	5
विवरण- १४८वाँ आर्य समाज-स्थापनादिवस एवं नयी पुस्तक (८०%) का लोकार्पण समारोह -- आचार्य डॉ. उमेश यादव	9
Launch of book "Major (80%) Role of Arya Samaj in Freedom Struggle of Bharat" - Dr. Narendra Kumar	12
Children's Corner – The Result of Education	16
News (पारिवारिक समाचार)	17
Emerency Funding for Tower	19
Members who pay donations by standing order	20
Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands	21
Your Arya Samaj is here to help you in "Your Hour of Need"	22
Weekly services details	23
Next Meeting for Voluntees	25

NEW HOURS

For General and Matrimonial Enquiries Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday – 12. 30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 10.30am to 4.30pm.
Thursday – 2.30pm – 8.30pm
Bank Holidays – Closed
Tel. 0121 359 7727

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.
Tel - 0121 359 7727
Charity registration number
1156785
E-mail
enquiries@arya-samaj.org
Website
www.arya-samaj.org
facebook
https://www.facebook.com/aryasamaiwestmidlands/

10 Principles of Arya Samaj

1. **God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means. (At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**

2. **God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**

3. **Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**

4. **All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**

5. **All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**

6. **The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**

7. **All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**

8. **We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**

9. **One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**

10. **In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights**

Is God totally undefeatable?
Can we also become undefeatable?

Na yam dipsanti dipsavo na druhvaano janaanaam. Na devamabhimaatayah.

Rigveda 1.25.14

न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुहवानो जनानाम्। न देवमभिमातयः।। ऋग्. 1.25.14

(Na) Not (yam) whom (dipsanti) offend (dipsavah) enemies (na) not (druhvaano) oppressors (janaanaam) of mankind (Na) not (devam) divine, giver (abhimaatayah) haughty, iniquitous.

Elucidation

Is God totally undefeatable?

Not whom enemies can offend, not the oppressors of mankind, not the haughty or iniquitous people, because He is the Supreme Divine Giver Devam.

Practical Utility in life

Can we also become undefeatable?

If we know that Supreme Being, realise Him and follow Him, certainly we will not be offended by enemies, oppressors of mankind or haughty, iniquitous people. Be a giver for the society, always be prepared to sacrifice, no evil would be able to offend you.

By Vimal Wadhawan Yogachary
Advocate, Supreme Court of Ind

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में कुछ महत्त्वपूर्ण राजागण-

आचार्य डॉ उमेश यादव

स्वामी पूर्णानन्द के शिष्य दण्डी विरजानन्द और दण्डी विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द जो महर्षि दयानन्द कहलाने लगे, इन तीनों ही संन्यासियों में एक मूल धारणा थी कि जब हम पहले राजाओं को सुधारेंगे तभी उनके द्वारा प्रजाओं में सुधार अभियान पूर्वक होगा । तब बहुत से भारतीय राजागण भी अंग्रेजों के चंगुल में बुरी तरह फंसे हुये थे । कुछ तो स्वार्थवश और कुछ मजबूरी व अज्ञानतावश । इन सब संन्यासियों ने इस प्रवल विचारधारा को एक प्रायौगिक रुप दिया और महर्षि दयानन्द ने उन सभी राजाओं को पहले साधा जो विशेष कर अपने गुरु दण्डी विरजानन्द के सम्पर्क में थोड़ा-बहुत रहा करते थे । महर्षि दयानन्द ने वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार की इस पद्धति में सफलता पायी जिसका नतीजा यह निकला कि १८५७ की लड़ाई विफल होने पर भी भारतीयों के अन्दर महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय चेतना मानव उनके रगों में खून बनकर दौड़ती रही ।

हमारा राजस्तान पृ.२७०- " १८५७ में अंग्रेजों से जमकर मुकाबला करने वाले हाथरस, मुरसान आदि के जमींदारों से तथा अलवर , भरतपुर, करौली, ग्वालियर, जयपुर आदि के राजाओं से उनका (स्वामी विरजानन्द जी का) घनिष्ठ सम्बन्ध था, उनमें से एक-दो को उन्होंने राजनीति, धर्म व दर्शन का अध्ययन कराके प्रवोध कराने का भी जतन किया था । " वस्तुत: महर्षि दयानन्द के ये सब प्रयास वर्त्तमान भारयीत इतिहास से ओझल है । इसका उजाकर करना हमारा धर्म है । ये सब हमारे लिये प्रेरणात्मक प्रमाण हैं ।

महाराजा सज्जनसिंह व अन्य तत्कालीन देशभक्त राजा - इसी पुस्तक के २९७ पृष्ठ पर इतिहासकार लिखता है कि " दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण भी उदयपुर रहकर ही पूरा किया, उसके छठे राज्य धर्म सम्बन्धी सम्मुलास में निबद्ध विचारों का चिन्तन सम्भवत: (उदयपुर नरेश) महाराणा सज्जनसिंह को दिये गये राजनीति और धर्म सम्बन्धी पाठों के सिलसिले में ही हुआ ।" हमारा राजस्थान के लेखक श्री पृथिवी सिंह मेहता (विद्यालंकार) ने आगे लिखा है कि महाराणा सज्जनसिंह महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य बनकर भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु विश्वासपात्र बन गये थे । कहते हैं कि १८७५ में युवराज एडवर्ड जब भारतभ्रमण के लिये आया तब उसके स्वागत में भारत के स्वाभिमानी सज्जन सिंह अंग्रेजों के लाख समझाने पर भी नहीं सम्मिलित

हुआ । १८८१ में उन्हें अंग्रेजी सरकार के.सी.ई. नामक सर्वोच्च उपाधि देना चाहती थी पर महाराणा सज्जन सिंह ने उसे ठुकरा दिया और भारत माता का स्वाभिमान सुरक्षित किया जिससे समस्त भारतीयों का वह गौरव ही नहीं बना अपितु महर्षि दयानन्द के मन में भी उसका सम्मानजनक स्थान बना । परन्तु अंग्रेजी सरकार उन्हें किसी तरह भी अपने पक्ष से दूर नहीं करना चाहती थी क्योंकि वह उस समय का सर्वाधिक वर्चस्वी राजा बना हुआ था । इस कारण एक रेलवे लाईन के उद्घाटन समारोह के बहाने उन्हें आमन्त्रित करने उनके निवास पर जाकर लॉर्ड रिपन ने राणा को वह उपाधि दे दी । इन सब कारणों से राजस्थान की स्वतंत्रता व स्वदेश का स्वाभिमान बनकर राणा सज्जनसिंह उभरे । निश्चय ही उसमें राष्ट्र के प्रति यह उज्ज्वल और उच्चतम भाव महर्षि दयानन्द के सम्पर्क से ही आया था । उसका परिणाम यह हुआ कि महर्षि दयानन्द ने उन पर सर्वाधिक विश्वास कर उन्हें अपने अंतिम समय पर लिखित उत्तराधिकारी पत्र में परोपकारी आर्य सभा का प्रधान मनोनित कर दिया था । इन्दौर नरेश भी महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीयस्वाभिमान भरे विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे । एक वार १८७७ में उन्होंने कुछ अन्य राजाओं को दिल्ली आमन्त्रित किया और उसमें महर्षिदयानन्द को भी क्षात्र धर्म पर एक प्रबल प्रेरणात्मक उपदेश के लिये बुलाया । वहाँ पहुंचकर महर्षि दयानन्द ने भी अपना कर्त्तव्य निभाया और अपने ओजस्वी प्रामाणिक विचारों से प्रभावित करना चाहा; इसके लिये आवश्यक सम्पर्क बनाना चाहा पर अंग्रेजी सरकार को किसी तरह पता चल गया जिससे से अपनी साम-दाम-भय-भेद आदि नीतियों से उनमें फूट डालकर उन सभी राजाओं को महर्षि दयानन्द के निकट भटकने न दिया । वस्तुत: अंग्रेजों को महर्षि दयानन्द सदैव उनकी आँखों में खटकते थे जिससे अंग्रेजी सरकार दयानन्द जी को कभी आगे आने न दिया करती थी फिर भी अपने अदम्य साहस व अद्भुत् वैदुष्य व अकाट्य प्रमाणों से महर्षि दयानन्द कभी पीछे न हटे और स्वदेशी अभिमान को सर्वत्र आजीवन जगाते ही रहे । कई राजाओं ने फिर भी महर्षि दयानन्द का अपने राज्य में स्वागत किया । इन्दौर नरेश सियाजी राव का नाम आगे आता है । मसुदा नरेश ने भी भरपूर देशभक्ति दिखाई और स्वामी जी का स्वागत किया । इसके लिये हमारा राजस्थान के कुछ पत्रों से ये प्रमाण सीधा उपस्थित किये जाते हैं जो राजस्थान में महर्षि दयानन्द के प्रयास पूर्णरुप से सराहणीय समझ में आते हैं-राजस्थान में महर्षि दयानन्द के अन्य शिष्य राजागण- हमारा राजस्थान-२८९-२९६ के अनुसार- इस आन्दोलन में आरम्भ से भाग लेने वालों में शाहपुरा का केसरसिंह था जो बारहट किशनसिंह का पुत्र था, वह महर्षि दयानन्द का शिष्य तथा महाराणा सज्जन सिंह के साथ यह भी अनेक राजाओं की तरह विश्वासपात्र बन गया था । " कर्नल महाराजा प्रताप सिंह कहा करते थे कि स्वामी दयानन्द ने हमको आदमी (मनुष्य) बना दिया है

। उन्हें इस बात का दु:ख था कि स्वामी दयानन्द की मृत्यु जोधपुर में विष देने से हुयी । वह परोपकारिणी सभा के प्रधान थे । जोधपुर आर्य समाज के भी प्रधान थे ।" ह. रा. २९५-९६ आर्य समाजी विद्वान् के सम्पर्क में बड़ौदा नरेश गायकवाड- इन्दौर नरेश के सानिध्य से बड़ौदा नरेश गायकवाड को उनके मानसिक गुरु स्वामी नित्यानन्द जी महाराज व राज्य रत्न पं. आत्माराम अमृतसरी की योजनायें प्राप्त थीं जिनसे वे वैदिक राष्ट्रवाद की शिक्षाओं से प्रेरित हुये । ये दोनों विद्वान् आर्य समाजी थे । तत्कालीन कुछ जानकार लोगों से यह जानकारी मिली थी जिसे इतिहासकार ने इसे लिपिवद्ध किया । आर्य समाज के त्यागी तपस्वी संत नामक पुस्तक का पृ. ३० इसका गवाह है ।

३ जनवरी १८७७ का महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित एक पत्र के अनुसार भी यह सिद्ध हो जाता है कि इन्दौर नरेश व बड़ौदा नरेश गायकवाड महर्षि दयानन्द के विश्वासपात्र शिष्यों में थे । यह पत्र दिल्ली दरबार के समय दिल्ली से रामगढ़ (सीकर) रि. जयपुर निवासी पं. कालूराम को लिखा गया था ।

पं. हरिश्चन्द कृत ऋषि चरित २६६ के अनुसार अनेक राजागण महर्षि दयानन्द के शिष्य बने पर सबका नाम नहीं आता, उनमें इन्दौर के राजा, बड़ौदा के राजा, कपूरथला (पंजाब) के राजा के नाम विशेषरुप से उल्लिखित है । यद्यपि महर्षि दयानन्द का राजस्थानी तमाम राजाओं पर एक अमिट प्रभाव बना तथापि अन्य राज्यों के राजाओं पर भी तथावत् प्रभाव लगातार बनता रहा तभी तो स्वतंत्रता संग्राम का विगुल एक साथ चारों ओर से बज उठा । बरौदा नरेश भी राष्ट्रभक्त बन गये थे । वीर अर्जुन एक अखबार के अनुसार तत्कालीन स्वदेश के लिये लड़ रहे एक क्रांतिकारी योद्ध श्री अन्नप्रज्ञकामेश्वर राव को उन्होंने ३००० रु० और एक कार देकर अपने पुलिश अधीक्षक द्वारा एक सुरक्षित स्थान पर भेजवा दिया था । यह उनकी राष्ट्रभक्ति व महर्षि दयानन्द के द्वारा राष्ट्र भक्ति के संस्कारों की वफादारी ही थी । यहाँ तक कि बम्बई राज्य की सरकार मानती थी कि बरौदा नरेश की देखरेख में उनके राज्य के मकरपुरा और बिल्ली मोरा में बम बनते हैं जो अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध काम में लाये जाते थे । उन्होंने जार्ज पंचम की अवज्ञा भी की थे फलत: उन्हें पथभ्रष्ट करने की धमकी दी गयी पर बरौदा नरेश गायकवाड अपनी राष्ट्र भक्ति से टस से मस न हुये । इसका ही परिणाम था कि उन्होंने १९३१ में एक गोलमेज कॉन्फ्रेंस में सर्वथा निडर होकर सर्वप्रथम यह घोषणा की कि अगर अंग्रेज भारत को स्वराज्य दे तो मैं अपना राज्य भारत में मिला दूंगा । यही हिम्मत उन्होंने लन्दन के टॉउन हॉल में १९३५ में एक भाषण में कहा कि भारत को स्वशासन आज नहीं तो कल देना ही पड़ेगा । उनका यह भाषण न केवल उनके साहस का प्रतीक है वल्कि महर्षि दयानन्द से प्राप्त राष्ट्र-प्रेम की शिक्षा का अनुपम उदाहरण भी है ।

महाराणा फतहसिंह- उदयपुर के राजा सज्जनसिंह की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह बने । वे भी महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय भावना व शास्त्र-प्रमाण युक्त सटीक शिक्षाओं से अत्यन्त प्रेरित थे । एक रोचक घटना है । महारानी विक्टोरिया के देहान्त के बाद सप्तम एडवर्ड को भारत के सिंहासन पर बैठाना था जिसका अभिषेक समारोह पर महाराणा
को भी सन् १९०३ में दिल्ली से निमंत्रण मिला और राज्यनियमानुसार वे समारोह में सम्मिलित होने के लिये दिल्ली की ओर चल पड़े पर बीच में ही ससेरी नामक स्टेशन पर ही उन्हें एक व्यंगभरा पत्र मिला जो एक स्वदेशप्रेमी दयानन्द भक्त श्री कृष्ण सिंह के पुत्र शाहपुर नरेश श्री केशरसिंह बारहट द्वारा लिखी हुई व्यंगभरी कविता थी जिसका शीर्षक था-"चेतावणीरा चूगंट्य" जो कविता इस प्रकार थी-"

"कठिन जमानो कौल बाधें नर हिम्मत वीणा (यो) वीरा हन्दो बोल पातल दसागो पेखियो । मानमोद सीसोद राजनीति बल राखणो (पण) गवरमिन्टरी गोद, मीठा फल दी ठा फतां ।" अर्थात् जमाना कठिन है । ऐसे कठिन समय में ही मनुष्य हिम्मत बांधता है । वीरों की इस वचन को प्रताप और साँगा ने पहचाना था । सिसोदिया के मजा राजनीति में बल रखने से था । परन्तु हे फतहसिंह? तुझे क्या हो गया? अब गवर्नमेंट की गोद में मीठे फल नजर आ रहे हैं ।" बस क्या था! यह कविता पढ़कर वे दिल्ली जाकर भी उक्त समारोह में सम्मिलित न हुये । उनका स्वाभिमान जाग उठा और मानो महर्षि दयानन्द की दी हुयी शिक्षाओं का असर दिख गया । इसी तरह १९१० में भी जब जॉर्ज पंचम भारत आये तो सभी भारतीय नरेशों के साथ ये भी निमन्त्रित हुये पर उसमें भी लड़के की बीमारी के बहाने से नहीं पधारे । उधर बरौदा नरेश सियाजी राव गायकवाड ने भी उस समारोह में अंग्रेजों की निर्धारित शिष्टता के व्यवहार की अवहेलना कर दी जिससे अंग्रेजी सरकार का मजाक उड़ा और उनकी खुशी में किरकिरापन आ गया जिससे अंग्रेज नाराज भी हुये ।

महाराणा फतहसिंह ने अनेक वार स्वाधीनता में जुड़े अनेक देशभक्तों को शस्त्र आदि साधनों तथा अन्यान्य सुरक्षा प्रदान कर उनकी रक्षा की और अपना स्वाभिमानभरी राष्ट्र-भक्ति का सफल परिचय दिया । पूरे राजस्थानी राजाओं में देशभक्ति की सिंहगर्जना महर्षि दयानन्द ने की और सबको राष्ट्र रक्षा हेतु तन-मन-धन से लड़ने के लिये पूर्णतया तैयार कर दिया जिसका पूरा प्रभाव क्रमश:
बढ़ता हुआ देखा गया और सम्पूर्ण आर्य समाज ही इस लड़ाई में सदैव जुड़ा हुआ पाया गया । स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, वीर भगत सिंह, रामप्रसाद विस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद आदि तमाम राष्टभक्त क्रांतिकारियों पर महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रभाव स्पष्ट देखा गया ।

विवरण- १४८वाँ आर्य समाज-स्थापनादिवस एवं नयी पुस्तक (८०%) का लोकार्पण समारोह

-आचार्य डॉ. उमेश यादव

१० अप्रैल,२०२२ रविवार को आर्य समाज का १४८वाँ स्थापना दिवस आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्टमिद्लैंड्स में अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । उक्त समारोह में " मेजर रॉल(८०%) ऑफ आर्य समाज इन फ्रिडम स्ट्रगल ऑफ भारत" एक नयी पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया । उल्लेखनीय है कि यह महत्त्वपूर्ण पुस्तक लगभग २ वर्ष के कठिन परिश्रम से आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स के धर्माचार्य डॉ. उमेश यादव एवं प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार द्वारा गहन अनुसंधान (रिसर्च से) पूर्वक तैयार की गयी । यह पुस्तक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अलग-अलग की गयी है पर अंग्रेजी भाषा का लोकार्पण उक्त समारोह में हुआ और हिन्दी भाषा में अभी इसकी प्रुफ रिडिंग आचार्य उमेश जी द्वारा चल रही है जिसका लोकार्पण आगामी भारतीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्भावित है ।

समारोह की निम्न विशेषताएं रहीं-

१. इसका प्रारंभ वैदिक अग्निहोत्र से हुआ ।

२."ओ३म् ध्वज" को आचार्य उमेश जी के मार्गदर्शन में विधिवत् सम्पन्न करवाया गया जिसमें मुख्य -अतिथि श्री रमेश कामरा, कॉसल भारतीय कॉसलावास बर्मिंघम, आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स के प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार व समस्त ट्रस्टी, डॉ. सत्यव्रत शर्मा, एम बी ई, पुलिसविभागीय अधिकारी श्री रमेश शर्मा तथा समारोह के स्पोंसर डॉ. बिजय सिंह की अगुवाई के साथ समारोह में उपस्थित अन्य श्रद्धालुओं की उपस्थिति अत्यन्त शोभायमान रही ।

३. ओ३म् -ध्वज गान "जयति ओ३म् ध्वज व्योम् विहारी" सामुहिक रुप से गाया गया जिसकी अगुवायी श्रीमती शमा कुमार ने श्रीमती शाँति कुमारी, श्रीमती बृजबाला दुग्गल एवं श्रीमती विभा केल के साथ की । इस गान में नि:संदेह सभी उपस्थित जनसमूह ने आनन्दपूर्वक भाग लिया ।

४. सम्बोधन-आकर्षण - ट्रस्टी श्री रवीन्द्र कुमार रेणुकोंटा ने अपने सम्बोधन में आर्य समाज की स्थापना का महत्त्व विस्तार से बताया, महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये शिक्षा-संकार पर चलने से ही मानव जीवन की सुखद सफलता है, आर्य समाज की आवस्यकता मानवता को बढ़ाने और सुरक्षित रखने में हमेशा रहेगी इत्यादि विन्दुओं पर प्रबल प्रकाश डाला । आर्य प्रतिनिधि सभा यू.के. की ओर से श्री नवीन गणपत, आर्य समाज टांडा (उ. प्र., भारत) की ओर से पधारे विशेष अतिथि श्री कृष्ण कुमार ने आर्योचित अपने उत्तम विचार प्रकट किये तथा आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स के द्वारा मानवहित में किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की । समारोह के मुख्य अतिथि श्री रमेश कामरा के करकमलों से उक्त नयी पुस्तक का विशेष लोकार्पण किया गया जिसमें डॉ. सत्यव्रत शर्मा एमबीई, श्री रमेश शर्मा तथा पुस्तक के संयुक्त लेखक आचार्य डॉ. उमेश यादव एवं डॉ. नरेन्द्र कुमार ने भी भाग लिया । पुस्तक का लोकार्पण का दृश्य सबके लिये सच में आनन्ददायक था । तत्पश्चात् डॉ. नरेन्द्र कुमार ने उक्त पुस्तक की मुख्य विशेषताओं को बताते हुये इस पुस्तक को दूर-दूर तक और यहाँ तक कि भारतवर्ष की वर्त्तमान सरकार तक भी पहुँचाने के लिये सम्भावित प्रयास की चर्चा की । इसी तरह आचार्य उमेश जी ने भी अपने उद्वोधन में महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय प्रेरणाओं का उल्लेख करके स्वतंत्रता-बलिदानियों को याद किया और भारतीय स्वतंत्रता के सूत्रधार आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को "राष्ट्र-पितामह" कहकर उन्हें नमन भेंट किया । एक स्वलिखित कविता के द्वारा राष्ट्र की महिमा, आर्य समाज का गौरव तथा भारतीय स्वततंत्रता के लिये समस्त आर्य बलिदानी वीरों को आर्य जगत् का गर्व बताया ।

५. आर्य समाज के युवा सदस्य सुकेतु यादव ने बहुत ही मधुर स्वर में " महर्षि दयानन्द की गाथा" कविता गायन कर सुनायी । ऋषि-गाथा पर श्री सुकेतु यादव द्वारा प्रस्तुत गायन सुनकर सभी उपस्थित समूह मंत्रमुग्ध हो गया ।

६. श्रीमती बृजबाला- ट्रस्टी ने सब अतिथियों, वक्ताओं, सहयोगिओं तथा श्रोताओं का विधिवत धन्यवाद किया ।

७. मंच का संचालन बहुत ही दक्षता के साथा युवा ट्रस्टी एवं 'ओ३म् सेवा युवा मंडल(आर्य समाज)' के संयोजक श्री विजय कुमार ने किया ।

८. कार्यक्रम के मध्य समारोह में आमंत्रित श्री कर्म सिंह 'कर्म' जो साप्ताहिक पंजाबी अखबार " मनजीत" के मुख्य सम्पादक हैं; उनका पुस्तक आदि भेंटकर स्वागत किया गया ।

९. समारोह में लगभग १०० लोगों की उपस्थिति हुई जिसमें अनेक संस्थाओं की ओर से भी लोग पधारे हुये थे । हिन्दु संगठन के युवा सदस्य श्री विपुल मिस्त्री भी उपस्थित थे ।

१०. अन्त में शांति पाठ के साथ स्वादिष्ट ऋषि-लंगर का सबने प्रीतिपूवक आनन्द लिया ।

Launch of book "Major (80%) Role of Arya Samaj in Freedom Struggle of Bharat"

Welcome and Congratulations to you all on occasion of 148 years of Foundation of Arya Samaj.

On this auspicious day, we are going to launch our book named "Major (80%) Role of Arya Samaj in Freedom Struggle of Bharat".

The main reason for writing this book has been –

1. **To inform the common people in the world and especially the Government of Bharat (India) that about 80% out of 100% of people who fought for the independence of Bharat from British Rule belonged to the Arya Samaj movement. The rest of 20% belonged to the other members of Indian National Congress (INC), India Muslim League Party and others. Members of Arya Samaj movement NEVER WANTED PARTITION OF BHARATVARSH (ARYAVRAT).**
   But this basic fact has not been told to the common people of Bharat and the world.
   What most of the population of Bharat and the world had been told that India achieved its independence from British Rule because of leaders of Indian National Congress party named Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru.
   This is what we were taught in our schools. Out of 75 years of freedom since independence, Bharat had been ruled by INC party for just under 60 years. Their ministers decided about syllabus for schools and colleges and wrote History of India as they wanted. Very important leaders like Shri Shyamji Krishna Verma, Lala Lajpat Rai, Swami Shraddhanand Saraswati, Neta Subhash Chandra Bose, Shri Ram Prasad Bismil and Veer Bhagat Singh and many more who lost their lives and everything for the freedom of India were not given any importance in history books written under directions of INC.

Now most of us agree that a true "History of Independence struggle of Bharatvarsh from British rule and History of Bharat in general" needs to be re-wtitten as soon as possible.

During her Emergency peiod Rule in Bharat year 1975, PM Mrs. Indira Gandhi inserted word "Secular" in the Constitution of Bharat.

We are not claiming that this book is complete with all the available literature till date.

2. **Through this book, we demand to the Government of Bharat to give official recognition of 80% involvement of members belonging to the Arya Samaj movement in freedom struggle.**

Over the past several years, I have been speaking about my pain due to the total lack of recognition of major role played by members of Arya Samaj movement. But not getting any answers.
In December 2019 trip to Bharat, I spoke to Shri Parmeshwar Nath Mishra, Senior Advocate/Barrister of Supreme Court of India, about this topic. He advised me to collect all the evidence available till now and then write a book about it and present it to the Honourable Prime Minister of Bharat Shri Narendra Modi ji and ask for the official recognition for the major (80%) role played by Arya Samaj members for the freedom of Bharat from British Rule.
In January 2020, I discussed this advice from Mr. Mishra with our Acharya Umesh Yadav, Minister of Religion Arya Samaj Birmingham. We agreed to start this major work straight way. Acharya ji started writing in Hindi language first. Due to the Corona pandemic and lock downs, we discussed on phone almost every day about contents and various chapters of this book. Later on, I started English language edition of this book.

Various learned followers of Arya Samaj had written books on this subject. Our book "Major (80%) Role of Arya Samaj in Freedom struggle of Bharat" is a collection of all these evidence available till year 2021 as well as writings of Acharya ji and mine.

There are 9 chapters and 388 pages in this book.
Hindi language book is still getting printed and will be available in July 2022.
We have kept the price of this book to minimum £10 per book.

The Special features of this book are as following.

1) **Shri Shyamji Krishna Verma**, a disciple of Maharishi Dayanand Saraswati, bought a 30-bedroom house in London for £1000 in year 1900. He was the first Indian to be called to the bar in year 1884 to practice as a Barrister in London courts. Shyamji was the First NRI to fight for the independence of Bharat from the British Rule. Shyamji Krishna Verma spent rest of his life in exile to achieve his goal for the Independence of Bharat from British Rule. He died in Geneva, Switzerland on 30th March 1930.
He made arrangements with Saint Georges crematorium, Geneva to preserve his and his wife's ashes for one hundred years and to send their urns to Bharat whenever Bharat became independent during that period. On 23rd of August 2003, exactly after 8 days and 55 years of Bharat achieving independence, Shri Narendra Modi ji, as a Chief Minister of Gujrat, brought back urns of Shyamji and his wife Mrs. Bhanumati Krishna Verma to Bharat. Modi ji got constructed a true replica his house in London and named it “Kranti Teerth” in Mandvi, Gujrat, Bharat.

2) **Veer Bhagat Singh -** Some notorious people had tried in vain to prove that Shaheed Bhagat Singh was an Atheist and did not believe in God. We have proved in our book that it is 100% wrong. **Shaheed Bhagat Singh was a Theist.**
Veer Bhagat Singh was born in a devout Arya Samaji family. His grandfather Sardar Arjun Singh, parents Sardar Kishan Singh & mother Srimati Vidyawati were devoted Arya Samaji. His grandfather and parents performed all necessary Sanskars on young Bhagat Singh, as written in Sanskarvidhi. He remained a true believer in teachings of Maharishi Dayanand Saraswati. He had his education in Dayanand Anglo Vedic Schools and

Colleges in Lahore. He performed regular Sandhya/Havan even during his stay at Arya Samaj Calcutta. You will read more in detail about it in this book.

3) **Mehr Chand Mahajan -** In order to determine exactly which territories to assign to India & Pakistan, in June 1947, Lord Mountbatten appointed Sir Cyril Radcliffe to chair two boundary commissions – one for Bengal and one for Punjab. Each Commission had two members from Indian National Congress and two from Muslim League. Members of Punjab Commission were Justices Mehr Chand Mahajan and Teja Singh representing India.
   The full credit of Jammu & Kashmir being an integral part of present Bharat goes to the Late Justice Mehr Chand Mahajan and Maharaja Hari Singh. You will read the whole true story about it in this book. **Of course, Mehr Chand Mahajan was a devoted follower of Arya Samaj.**

4) **Hyderabad State -** The real credit of defeat of Nizam of Hyderabad and inclusion of State of Hyderabad-Karnatak in independent Bharat goes to the local foot soldiers of Arya Samaj movement under the skilful leadership of devout Arya Samaj leader Pandit Narendra Ji.
   Sardar Vallabhbhai Patel, Deputy Prime Minister and Home Minister of independent Bharat did provide logistic and Military support to local Arya Samajis including Pandit Narendra Ji.

Towards the end I would like to say that our young and future generations will find this book as a source of inspiration and present members of Arya Samaj movement will feel proud of the achievements of their ancestors for independent Bharat from British Rule.

Dr. Narendra Kumar
Chairman

Children's Corner

The Result of Education

A cruel bandit caught two parrots in the forest. While returning home, one of the parrots escaped and flew away and found shelter in a Sage's house.

A few years later, a king lost his way and reached the bandit's hut in the forest. The parrot in the bandit's house shouted. "A rider is approaching the house. Catch him and kill him!"

The king swiftly changed his course and rode in the other direction.

He then reached the sage's house, where the second parrot politely said, "Please come inside and rest. We will arrange for some fresh fruits."

The surprised king replied, "I recently saw a parrot just like you, but he spoke to me quite rudely."

The parrot then narrated the story of how he got separated from his twin brother.

The King said, "A good education has given you good manners. Your brother's foul speech is the result of bad education."

Moral of the Story: Good manners are learnt behaviour.

News

Please note

Car Parking for members on Sunday Congregation can safely park their cars on Rookery Road where there is SINGLE YELLOW LINE and after 6pm on weekdays.

Congratulation:

- Mrs Aikta Varma and Mr Taran Singh – for their wedding celebrations on 2nd April 2022. Wishing them a lifetime of happiness.

Condolences:

- Mr Madan Mohan Sharma and family - for the loss of his beloved wife Mrs Madhu Sharma who passed away on 19th April 2022. We pray to Almighty God to give Sadgati to her soul and strength to the family to cope with their loss.

Havan:

- Mr Amit Thaper and family – Havan on 3rd April 2022 for happiness in family. Wishing them good heath and prosperity.
- Mr Hemendra Verma and family – Havan on 3rd April 2022 for naming cermony of his daughter Hrutvy. Wishing her good heath and happiness.

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:

- Mrs Aikta Varma £400
- Mr Amit Thaper £101
- Anoymous £51

Donations:

- Mrs Suraksh Kanta Soni £251
- Dr Bijay Singh £250

(In memory of his beloved mother inlaw Mrs Lakshmi Panwar (94) who passed away on 23rd December 2021 in Bharat. Mrs Panwar was the mother of Dr (Mrs) Rajul Singh.)

- Mrs Meena Sukdev £100
- Mr J P Sethi £51
- Mr Hemendra Verma £51
- Mrs Mamta Gupta £50
- Dr Umesh Kathuria £32
- Mr Varinder Bahal £21
- Mrs Rekha Gupta £21
- Mr Pardeep Chaudhari £20

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences, on different occasions Or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Thank you for all your donations we are very grateful!

We need more of our members to donate monthly/yearly.

We need to expand our list of generous monthly/yearly donors list to financially support our Arya Samaj in future.

At present we are receiving about £300 of regular donations every month. We need to increase to £1000 a month at least in near future.

About 25 of our members are already donating regularly. We are grateful to them and thank them for their generosity.

Please get in touch with Arya Samaj office or donate directly into Arya Samaj Bank account as below by setting up a monthly standing order.

Bank Transfer – The Co-operative Bank
Name of account – Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
Account number – 65839135 Sort Code – 08.92.99

Once you have donated online, please let us know by email or phone.

Your help is highly appreciated. Thank you.

Dr. Narendra Kumar - Chairman

EMERGENCY FUNDING FOR TOWER

Name	Amount
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£2000
Mr Joginder Pal and Mrs Santosh Sethi	£1100
Dr Umesh Kathuria & Dr Subash Kathuria	£1001
Mrs Rama Joshi	£1001
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£1000
Dr Saroj Adlakha	£1000
Dr & Mrs Shail Agarwal	£1000
Mrs S Bhandari	£1000
Mr Ved Parkash Rawal	£1000
Dr Vijay and Mrs Archna Bathla	£1000
Dr Anil and Mrs Urvind Kohli	£1000
Dr Narendra Patel	£501
Mr Swaraj and Vijay Kumar	£301
Anonymous	£201
Dr Satya Vrat Sharma	£200
Mr Vinod Gulati	£200
Mrs Usha Khosla	£151
Mrs Suraksh Soni	£125
Mr Surinder Julka	£101
Dr Smita Mehra	£101
Dr Chetan Varma	£101
Mr Krishan Khurana	£101
Ms Anita Rastogi	£101
Mr Raj Joye	£101
Mr Ashok Panday	£101
Mr Parimal Somani	£101
Mrs Nirmal Prinja	£100
Mr Ashok & Mrs Sunita Bakshi	£100

Members who pay donations by standing order

Name	Amount	Payment
Mrs Kanti Bajaj and Family	£250	Yearly
Mr V.P Rawal	£121	Yearly
Mr Parimal Somani	£120	Yearly
Mrs Brij Bala Duggal	£120	Yearly
Dr Vivek Gulati	£101	Yearly
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£81	Yearly
Dr Chetan Varma	£30	Monthly
Dr P.D. Gupta	£21	Monthly
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£20	Monthly
Mr Varinder Bahal	£15	Monthly
Mrs Nirmal Prinja	£15	Monthly
Dr Umesh Kathuria & Dr Subash Kathuria	£15	Monthly
Mr Vinod Gulati	£10	Monthly
Mr Alok Yadav	£10	Monthly
Mr Jatender Vatta	£10	Monthly
Mr Madan Mohan Sharma	£10	Monthly
Mr Ravinder Renukunta	£10	Monthly
Mrs Sushma Grover	£10	Monthly
Mr Medharthee Rathore Arya	£10	Monthly
Dr M D Agarwal	£10	Monthly
Mr Anand Vrat & Mrs Renuka Chandan	£10	Monthly
Mr Rajive Bali	£10	Monthly
Mr P Puttyah	£10	Monthly
Mr Joginder Pal Sethi	£10	Monthly
Mr Krishan Chand Talwar	£10	Monthly
Mr Swaraj Kumar & Mrs Vijay Luxmi	£8.50	Monthly
Mr Vipul Mistry	£5.25	Monthly
Mr Amit Khanna	£5.00	Monthly
Mr Vijay Kumar	£5	Monthly

Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information -

- Ordinary membership fee is £20 for 12 months & Life membership is £500 paid once.
- Renewal for ordinary members of ASWM will get reminder letter for their membership fee of £20 each year.
- Matrimonial Service - £90 for 12 months
- Hire of our hall –
  - Maharishi Dayanand Hall and Swami Shraddhanand Hall – Members and friends can hire hall for celebration of birthday etc, as long as you do not drink alcohol and eat meat. We ask for a donation to cover electricity, gas and cleaning expenses. Please call 0121 359 7727 to book your event.

Donations to Arya Samaj for Priest Service.

- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £51
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £101
- Cremation & Shanti Havan performed by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £200
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £250
  - Shanti Havan at Arya Samaj after cremation - £200

Note – Arya Samaj policy – All fees for Sacraments and Cermation are paid within 7 days.

YOUR ARYA SAMAJ IS HERE TO HELP IN "YOUR HOUR OF NEED"

Dear members

Due to Covid-19 Pandemic and other issues, some of us have been going through all kinds of problems.

Your Arya Samaj is here to help you in your hour of need.

Please get in touch with us. Our Acharya ji, Shri Umesh Yadav, is a resident priest and lives in our Arya Samaj Bhavan.

You can contact him by phoning on 0121 3597727 or emailing on enquiries@arya-samaj.org

If Acharya Ji is not available to answer your phone, please leave a message with your full name, telephone number and briefly about your problem. It will be answered soon.

Please do not suffer alone. Talk to us. We exist to support our members and friends, especially when they are in any kind of trouble.

So please remember us in "Your Hour of Need".

Thank you.

Kind regards.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar

Weekly services details

Please share with family & friends

NEW – Tuesday Bhangra and Fitness Class – only at Bhavan

Starting from 23rd May 2022

Time: 6:30pm – 7.30pm

Please join Mr Kulwinder Singh every Tuesday 6.30pm – 7.30pm for Bhangra and fitness class. This is a free class and everyone is welcome.

Wednesday Day Centre – only at Bhavan

Time: 12pm – 3pm

Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 12pm. Emphasis is on keeping healthy and fit with yog and Pranayam. We will offer Tea/Coffee and biscuits free of cost. Those members who would like to have Lunch, we will try to provide lunch at the cost charged by caterer to us.

Wednesday Sanskrit Learning – via zoom only

Time: 8:00pm – 9pm

Every week from Wednesday 6th April 2022, until August 31st 2022. New ID will be sent out in September 2022

Join Zoom Meeting
https://us06web.zoom.us/j/87334999558?pwd=NVVmbVhIb3h1NTFFdzdYN2w5bDBiQT09

Meeting ID: 873 3499 9558

Passcode: Vedic2

NEW – Sunday Yog Class – only at Bhavan

Time: 9:00am – 11am

Please join Amrik Singh Virdi (YOG Teacher) every Sunday 9am to 11am for Yog and fitness class. Amrik has been a yog teacher

since 2012. This is a free class and everyome is welcome. Please bring your own mat and water bottle. Full support will be given with all exercises in a friendly environment. Learn self management massage techniques, Ayurveda Treatments, and much more.

Sunday Havan and Satsang

Time: 11:00am – 1pm - followed by Rishi Langer

Every week from Sunday 3rd April 2022, until August 28th, 2022. New ID will be sent out in September 2022

Join Zoom Meeting
https://us06web.zoom.us/j/88144493522?pwd=dUs3c25rWjJ5NDZndXlYN283dEdLZz09

Meeting ID: 881 4449 3522

Passcode: Havan2

If you would like the zoom links sent to your mobile or email please email us on enquiries@arya-samaj.org. We will need your email address or mobile number and we can add you to the list.

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted, please inform the office.

0121 359 7727

Member or non-member wishing to be sponsor Yajman in the Sunday congregation at Arya Samaj.
Please call 0121 359 7727

If you are not having any symptom of Covid-19, we request you to start attending Sunday Congregation, Yog Class & other events we will hold this year at Arya Samaj Bhavan. But for the benefit of those members who can not come to Bhavan we will continue providing our services on Zoom.

MEETING FOR VOLUNTEERS

We are holding our 4th and 5th Meeting for Volunteers to attend **on Sunday 8th May 2022 and Sunday 12th June 2022.**

Time: - 1:00 p.m. – 3:00 p.m.

Venue: - The meeting will take place in Our Arya Samaj's Building - Swami Shraddanand Hall.
This meeting will be hosted by Mr Vijay Kumar and Mr Vinod Gulati Ji (BOT Members) Along with Miss Raji Chauhan (Office Manager), Our Acharya Dr. Umesh Yadav Ji (Minister of Religion) and Mrs. B.B. Duggal (BOT Members).

Topic: YOUTH ACTIVITIES & 'SEWA' TASKS - Most Charity Organizations have volunteers who help with simple tasks during organisations activities. If you can offer to do 'Seva' even if it is once a week or month for 2 - 3 hours, it would be helpful. Even if you cannot commit to giving time at present, please do attend so that we can hear your views.

We know that most of you would like to help and support but quite often people do not know what help is needed and when. We have made a list of activities and it will be shared with you in the meeting.

We look forward to meeting with you and may we take this opportunity to thank you for your support.

AUM YOUTH VOLUNTEERS SEWA MANDAL
ARYA SAMAJ (VEDIC MISSION) WM UK